प्रधानमंत्री को कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि प्रदान करने के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

लंदन
11 अक्तूबर 2006

सम्यक वैश्वीकरण की ओर

मुझे यहां पर भाषण देने के लिए आमंत्रित करके और मुझे डॉक्टर ऑफ लॉ की डिग्री देकर आपने मुझे जो यह सम्मान दिया है, मैं उसे बहुत गहराई से महसूस कर रहा हूं। मैं उन भाग्यशाली लोगों में से एक हूं, जिसे ब्रिटेन की सबसे पुरानी यूनिवर्सिटी ने अपनाया है। आइसिस से दूसरी जगह जाने से पहले मैंने कैम नदी को देखा, जब मैं सेंट जॉन में अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए आया था। शुरू में मैं सेंट जॉन में था। हल्का नीला रंग मेरी पसंद है और अक्सर ही मेरे सिर पर दिखाई देता है। कैम्ब्रिज के दिनों की मेरे पास गहरी यादें हैं। मुझे निकोलस कालदोर, जोवान रॉबिन्सन, मॉरिस डॉब और प्रो. आर.सी.ओ.मैथ्यूज़ जैसे शिक्षकों ने पढ़ाया था। मार्शल लाइब्रेरी में मैंने अर्थशास्त्री पियेरो सराफा को कड़ी मेहनत करते हुए देखा था। वो सब मुझे याद है। यहीं पर ही उन्ही दिनों अमर्त्य सेन, जगदीश भगवती, महबूब उल हक और रहमान सोभन थे, जो दक्षिण एशिया जाने माने अर्थशास्त्री हैं। वे मेरे जिन्दगी भर के दोस्त बन गए। कैम्ब्रिज में मेरे शिक्षकों और साथियों ने मुझे तर्क के लिए खुले दिल से सामने आने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा था कि अपनी राय निडरता से देनी चाहिए। ये सारी बातें और बौद्धिक सत्यता के रास्ते पर चलने की मेरी उत्कट इच्छा, यहीं कैम्ब्रिज में पनपी। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी ने मुझे कई महत्वपूर्ण तरीकों से बनाया।

मै निश्चित रूप से अकेला भारतीय नहीं हूं, जो इस महान विश्वविद्यालय का त्रऽणी है। जवाहरलाल नेहरू ट्रिनिटी में थे और उनके पौत्र राजीव गांधी भी। दोनों भारत के प्रधानमंत्री बने। मैं भारत का तीसरा प्रधानमंत्री हूं, जिसकी शिक्षा कैम्ब्रिज में हुई है। भारत-कोकिला के नाम से मशहूर सरोजिनी नायडू ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने गिर्टन में शिक्षा प्राप्त की थी। राजनीतिक नेतृत्व के अलावा कई ऐसे प्रसिद्ध भारतीय है, जिन्होंने कैम्ब्रिज में शिक्षा प्राप्त की और बाद में विज्ञान के क्षेत्र में और भारत में सार्वजनिक जीवन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस संदर्भ में मुझे जगदीश चंद्र बोस की याद आती हैं, जो 1880 के वर्षों में क्रिस्ट में थे। वे रेडियो तरंगो और पौधों में जीवन संबंधी अध्ययन में अग्रणी थे। मुझे श्रीनिवासन रामानुजन की भी याद आ रही है, जो अंको के सिद्धांत के विशेषज्ञ थे, जिन्हें जी.एच.हार्डी ट्रिनिटी लाए थे। पी.सी.माहलानोबिस किंग्स में थे, जिन्होंने कलकता में भारतीय सांख्यिकी संस्थान की स्थापना की। होमी जे. भाभा ने गोनविले और काईस में शिक्षा प्राप्त की, जिन्होंने भारत के परमाणु कार्यक्रम के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और मुम्बई में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च की स्थापना की। भारत में हरित क्रांति के सूत्रधार एम.एस स्वामीनाथन ने सेंट कैथरीन में पढ़ाई की। मैने यहां सिर्फ कुछ मशहूर हस्तियों का जिक्र किया हूं, लेकिन कई और हैं- सामाजिक विज्ञानों में, शिक्षा में और भारत सरकार में, जो मेरी तरह इस विश्वविद्यालय को अपना विद्यालय समझते हैं। भारत और कैम्ब्रिज के बीच संबंध बहुत पुराने और स्थायी हैं।

वैश्वीकरण

जब मैं 1950 के दशक के मध्य में कैम्ब्रिज आया था, तो विश्व शीत युद्ध के कारण दो हिस्सों में बंटा हुआ था। भारत को कुछ साल पहले ही आजादी मिली थी और वह जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में इस बंटे हुए विश्व में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा था। भारतीयों के लिए यह एक आशा का युग था और विकासमय भविष्य के बारे में बड़ी-बड़ी उम्मीदें थी।

आज लगता है दुनिया में बहुत कुछ बदल गया है। शीत युद्ध इतिहास की बात हो गई है। आजादी के नए युग ने दुनिया को नई टेक्नोलॉजी दी है और उत्पादन तथा संचार के क्षेत्र में क्रांति पैदा कर दी है। सरकारी नियंत्रण हटने से आर्थिक शक्तियां उभर कर सामने आ गई हैं। ज्यादा से ज्यादा देश अब वैश्विक आर्थिक प्रणाली में समावेशित होते जा रहे हैं, जिसमें व्यापार और अन्य देशों में पूंजी निवेश, पूरे जोर-शोर से हो रहा है। आजादी का यह युग आर्थिक विकास का युग भी है।

इस वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पहलू विश्व बाजार की उभरती अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण है। वास्तव में इन उभरती अर्थव्यवस्थाओं को वैश्विक आर्थिक गतिविधियां धीरे-धीरे प्रभावित कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप उनसे 40 प्रतिशत विश्व निर्यात हो रहा है, जो 25 वर्ष पहले 20 प्रतिशत था।

विकासशील विश्व के कई भागों में, विशेष रूप से भारत और चीन में, प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो रही है या हर 10 साल में दोगुनी होने की संभावना है। इससे लाखों करोड़ो लोग गरीबी के दायरे से ऊपर उठ जाएंगे। परिवर्तन की यह गति अप्रत्याशित है और यूरोप में औद्योगिक क्रांति के समय जो परिवर्तन हुआ था, उससे कहीं अधिक है। दुनिया भर में मुक्त व्यापार और आर्थिक लेन-देन से कुल मिलाकर मुद्रा स्फीति को नियंत्रण में रखने, ब्याज दरों को कम करने और पूंजी निवेश के ऊंचे स्तर को बनाए रखने में सहायता मिली है।

मेरे अपने देश में, 1990 के शुरू के वर्षों में प्रारंभ हुए आर्थिक सुधारों से अर्थव्यवस्था और अधिक प्रतियोगी हो गई है। भारत के उद्योग नए बाजार अवसरों के अनुरूप काम कर रहे हैं। भारत के विकास में आगे बढते उद्यमियों का विशेष योगदान है। भारत के युवा, तकनीकी व वैज्ञानिक संस्थानों में प्रवेश पाकर भारत को एक ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था बनाने के काम सहायता कर रहे हैं। मैं समझता हूं कि भारत मूल्यों में स्थिरता बनाये रखने के साथ-साथ अब हर साल 7 से 9 प्रतिशत की विकास दर हासिल करने के रास्ते पर है। गरीबी की रेखा से नीचे रह रहे लोगों की संख्या कम होती जा रही है।

वैश्वीकरण : कुछ चिंताएं

वैश्वीकरण के युग की इन उपलब्धियों को देखते हुए हमारी आंखें उन चिंताओं के प्रति बंद नहीं हो जानी चाहिए, जो वैश्वीकरण के कारण पैदा हुई हैं। वैश्वीकरण का असर दुनिया के कई भागों तक अभी नहीं पहुंचा है। वास्तविक स्थिति से पता चलता है कि इस प्रक्रिया से आय की व्यक्तिगत और क्षेत्रीय असमानता समाप्त नहीं हुई हैं। कई विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्र विकास से अभी अछूते हैं। औद्योगिक देशों में कामगारों के वास्तविक वेतन वहीं के वहीं हैं, जिसके कारण नए-नए बाजार खुलने से वे डरे हुए हैं। गरीबों और अमीरों के बीच खाई बढती जा रही है। इसके साथ-साथ स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त बेहतर सेवाएं उपलब्ध कराने और गरीबों की जरूरतों को पूरा करने में सार्वजनिक क्षेत्र की असमर्थता से रोष और अलगाव की भावना पैदा हो रही है। इससे फूट डालने वाली ताकतों को बल मिल रहा है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं पर दबाव पड़ रहा है।

ये वास्तविक चिताएं हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मैं आपसे कहना चाहूंगा कि हमें वैश्वीकरण को एक समेकित प्रक्रिया बनाकर इन चिंताओं को दूर करने पर ध्यान देना होगा। इस समेकित वैश्वीकरण के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है। इसके लिए नए वैश्विक दृष्टिकोण की जरूरत है।

वैश्विक दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण से यह सुनिश्चित होना चाहिए कि वैश्वीकरण का लाभ ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचे। यह गहरी चिंता की बात है कि व्यापार वार्ताओं का दोहा विकास दौर एक दोराहे पर आ खड़ा हुआ है। अगर व्यापार को गरीबी समाप्त करने का साधन बनना है और दुनिया में अधिक न्यायोचित तरीके से विनिर्माण क्षमताओं का विकास करना है, तो यह बहुत जरूरी है कि विकासशील देशों से कृषि उत्पादों के निर्यात के रास्ते की रुकावटों को समाप्त किया जाए।

विकासशील देशों की लगभग दो-तिहाई आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। विकसित देशों में यह 10 प्रतिशत से भी कम है। मेरी अपील है कि विकसित देशों को अपने लघु अवधि के राष्ट्रीय हितों को मुक्त व्यापार को बढ़ावा देने और गरीबी समाप्त करने के प्रयासों के रास्ते में नहीं आने देना चाहिए। कुछ लोगों के हितों की रक्षा के लिए बहुत सारे लोगों की खुशहाली की कुर्बानी नहीं दी जानी चाहिए। इस संर्कीण दृष्टिकोण के कारण विकसित देशों के खजानों को काफी बोझ उठाना पड़ता है। इसके अलावा इसके गहरे नैतिक आयाम भी हैं।

गरीब देशों के लोगों को वैश्वीकरण के लाभों के बारे में समझाने के लिए हमें सेवाओं के व्यापार में उदारीकरण और अधिक श्रम वाले निर्माणों पर ध्यान देना होगा, जिनमें विकासशील देश स्पर्धा कर सकते हैं। मैं व्यापार को सिर्फ खुशहाली का साधन नहीं मानता हूं, बल्कि शांति निर्माण का साधन भी मानता हूं। हमें मिलकर हानिकारक गैसों के उत्सर्जन में कमी, जीवन रक्षक दवाओं के उत्पादन में बौद्धिक संपदा अधिकारों, उन प्रौद्योगिकियों के आदान-प्रदान के बारे में जिनसे गरीबी समाप्त करने में सहायता मिलती है और अन्य ऐसे ही अन्य मुद्दों के बारे में वार्ताओं के दौरान प्रबुद्ध दृष्टिकोण अपनाना होगा।

भाइयो और बहनो, खुशहाली को बांटा नहीं जा सकता। न ही गरीबी को समाप्त किए बिना विश्व शांति संभव है। जैसा कि जवाहरलाल नेहरू ने 1949 में कनाडा की संसद में अपनी संबोधन में कहा था

''अगर दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बड़ी संख्या में लोग गरीबी और दुर्दशा में रह रहे हैं, तो कोई सुरक्षा या वास्तविक शांति नही हो सकती। न ही विश्व में संतुलित अर्थव्यवस्था हो सकती है, अगर अविकसित देश इस संतुलन को बिगाड़ते रहते हैं और यहां तक कि अधिक समृद्ध देशों को नीचे की ओर खींचते रहते हैं।''

आतंकवाद और कट्टरवाद-सभ्यताओं के संघर्ष से सभ्यताओं के संगम तक

गरीबी समाप्त करने के लिए हमारी अच्छी-अच्छी से कोशिशें भी बेकार जाएंगी, अगर हमारे समाजों और देशों के सामने आतंकवाद और उग्रवाद का खतरा बना रहता है।

भारत और ब्रिटेन जैसे खुले समाज इस खतरे के ज्यादा शिकार हो सकते हैं। जितना हमारे समाजों में खुलापन होगा, उतना ही हम खतरे के नजदीक हैं। फिर भी अपने खुलेपन या कानून के शासन को छोड़े बिना, जिनसे व्यक्ति की स्वतंत्रता की गारंटी मिलती है, हमें आतंकवाद से लड़ना होगा।

मेरा विश्वास है कि केवल कट्टरवाद का मुकाबला करने और विविधताओं के प्रति सम्मान बढ़ाने से आतंकवाद को हराया जा सकता है। समान कानून, स्वतंत्रता और लोकतंत्र का जन्मदाता और जॉनस्टूअर्ट मिल तथा बर्ट्रेंड रस्सेल के देश ब्रिटेन को कट्टरवाद का मुकाबला करने में महत्ती भूमिका निभानी होगी। भारत की भी अपनी बहुसमुदायी परंपराएं हैं और अन्य संस्कृतियों के प्रति उदार दृष्टिकोण है। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने विरासत छोड़ी है कि हम दृढसंकल्प

के साथ कट्टरवाद का मुकाबला करें। हम सभ्यताओं के संघर्ष में विश्वास नहीं रखते। हम सभ्यताओं के संगम और सांस्कृतिक समेकता के जरिए मानव परिस्थितियों को समृद्ध करने में विश्वास रखते हैं।

वैश्विक प्रशासन

लोकतंत्रीय देश होने के नाते हमें दुनिया भर में प्रशासन को लोकतंत्रीय बनाने के लिए मिलकर काम करना होगा। लोकतंत्र होने के नाते हम ऐसे विश्व की कामना करते हैं, जिसमें वैश्विक संस्थाएं और अधिक लोकतंत्रीय हों तथा दुनिया के सभी लोगों की ज्यादा प्रतिनिधि संस्थाएं बने। आज की वैश्विक संस्थाओं की प्रशासन प्रक्रिया-चाहे वे ब्रेटन वुडज़ संस्थाएं हों या संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद हों, ये विश्व की उन्ही वास्तविकताओं को परिलक्षित करती हैं, जो आधी शताब्दी से भी ज्यादा समय पहले थी।

दुनिया के लोगों को साथ लेकर चलने के लिए वैश्विक प्रक्रिया को और समेकित बनाने के वास्ते इन संस्थाओं में सुधार जरूरी है, ताकि विकासशील देशों की वहां ज्यादा आवाज हो। अगर वैसा नहीं किया जाता तो अलगाव की स्थिति बनेगी और वैश्विक प्रणाली प्रभावहीन रहेगी। मैं ब्रिटेन, राष्ट्रमंडल और विश्व के अन्य बड़े देशों से अपेक्षा करता हूं कि वे ऐसी वैश्विक प्रणाली को स्थापित करने में सहयोग करें।

भाइयो और बहनो,

आप हैरान हो रहे हैं कि मैंने इस मंच पर ऐसे विचार क्यों प्रस्तुत किए। प्रथम विश्व युद्ध से पहले इलाहाबाद से एक युवक हैरो होते हुए ट्रिनिटी आया था। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद एक सीधा-साधा भारतीय युवा, पंजाब के एक अनजान विश्वविद्यालय से सेंट जॉन आया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने दोनों को गले लगाया। मेरे इस विद्यालय की सभी को अपनाने की इस खूबी ने मुझे समेकित वैश्वीकरण के बारे में बोलने का साहस दिया है। आपने जिस धीरज और चाव के साथ मुझे सुना, उसके लिए मै आपका आभारी हूं।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

******